महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

१४/०९/२०२६

मूलस्वरूप स्थिति का अभ्यास

सभी आत्माएँ अपने मूलस्वरूप में स्थित हो जाएँ... ब्रेन के अंदर हाइपोथैलेमस और पिट्यूटरी ग्लैंड के बीच में मुझ आत्मा का सिंहासन है... उस सिंहासन पर मैं आत्मा स्थित हूँ... अपने मूलस्वरूप को देखें... अपने मूलस्वरूप के वाइब्रेशन को अनुभव करें... मैं आत्मा चमकता सितारा... यह मैं हूँ... यह मेरा मूलस्वरूप है... अनुभव करते जाना... देखना अपना मूलस्वरूप कैसे चमक रहा है... उससे एक लाइट निकल रही है... अनुभव करें... यह जो मेरा मूलस्वरूप है... उसके वाइब्रेशन ब्रेन में फैल रहे है... कुछ सेकंड इन वाइब्रेशन को फील करो... देखिए.. अपना मूलस्वरूप... इस मूलस्वरूप के वाइब्रेशन पूरे शरीर में फैल रहे हैं... अनुभव करें... यही मेरा सत्य स्वरूप है... यह मैं हूँ... यह मैं.. मेरे सभी सूक्ष्म और स्थूल कर्मेंद्रियों को चलाती हूँ... देखें अपना मूलस्वरूप... जितना-जितना हर कोई अपना मूलस्वरूप देखेगा उतना-उतना उसका मूलस्वरूप जागृत होगा...